फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 229 | जुलाई 2007

यहाँ सट्टा बाजार उर्फ शेयर मार्केट में नित नई ऊँचाई का प्रमुख कारण मजदूरों की यहाँ बद से बदतर की जा रही स्थिति है जिसकी एक झलक दिल्ली– गुड़गाँव –फरीदाबाद की फैक्ट्रियों में दिखती है।

कुछ बातें दिल्ली से

1.2.2007 से डी.ए. के 158 रुपये जुड़ने के बाद दिल्ली में सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : 8 घण्टे की ड्युटी और सप्ताह में एक छुट्टी पर महीने के अकुशल श्रमिक (हैल्पर) को 3470 रुपये (8 घण्टे के 133 रुपये 45 पैसे); अर्ध-कुशल मजदूर की कम से कम तनखा 3636 रुपये (8 घण्टे के 139 रुपये 85 पैसे); कुशल श्रमिक का कम से कम वेतन 3894 रुपये (8 घण्टे के 149 रुपये 75 पैसे)। स्टाफ में अब कम से कम तनखा मैट्रिक से कम की 3663 रुपये; मैट्रिक पास परन्तु स्नातक से कम की 3918 रुपये; स्नातक एवं अधिक की 4230 रुपये।

हौज रानी में कब्र में काम करता मजदूर: "मालवीय नगर के पास हौज रानी में बेसमेन्ट में फैक्ट्रियाँ कुछ ज्यादा ही हैं। बाहर से फैक्ट्री दीखती ही नहीं – ऊपर किरायेदार रहते हैं। फैक्ट्रियों के नाम हैं ही नहीं, सिर्फ मकान सँख्या है। हम मजदूरों को हाजिरी कार्ड देते हैं पर कार्डों पर भी किसी कम्पनी का नाम नहीं होता। कपड़े की कटिंग, सिलाई, कढाई, फिनिशिंग, पैकिंग वाली इन फैक्ट्रियों में 50 से 150 मजदूर काम करते हैं। यह कोई छुपी हुई बातें नहीं हैं, इन्हें सब जानते हैं – सरकारी अधिकारी इन फैक्ट्रियों में कभी नहीं आते।

"बेसमेन्ट में तकलीफ ही तकलीफ हैं – हवा गर्म, कपड़ों की गर्द, रसायनों की बदबू, घुटन। इन फैक्ट्रियों में पीने के पानी की भारी समस्या रहती है, हमें अक्सर खरीद कर पानी पीना पड़ता है। फैक्ट्रियों में भोजन करने के लिये स्थान नहीं हैं और अन्यथा भी कई मजदूर ढाबों पर महीने में एक समय भोजन के 300 रुपये वाला खाना खाते हैं। हौज रानी में किराये बहुत ज्यादा हैं इसलिये अधिकतर पुरुष मजदूर फैक्ट्रियों में ही रहते हैं। बेसमेन्ट कब्र ही है........ हजारों मजदूर कब्रों में काम करते और रहते हैं।

"हौज रानी की बेसमेन्ट फैक्ट्रियों में महिला मजदूरों की सँख्या भी काफी है। महिलाओं की शिफ्ट सुबह 9½ से साँय 6½ की है और पुरुषों की सुबह 9½ से रात 9½ की। लेकिन कारीगरों को पीस रेट पर रखते हैं इसलिये दो पैसे अधिक के फेर में रफ्तार तेज करने के संग समय भी अधिक लगाते हैं। धागा काटने वाले पुरुष हों चाहे महिला, यह मजदूर तनखा पर रखे जाते हैं और वेतन है 1200-1800 रुपये महीना। चैकर और प्रेसमैन की तनखा 2800-3000 रुपये। जिन्हें मास्टर कहते हैं वे यहीं के बहुत पुराने वरकर हैं और इन लाइनमैन, फिनिशिंग मैन, कटिंगमैन की तनखा 4200-7000 रुपये है। तनखा वालों को सिंगल रेट से ओवर टाइम के पैसे देते हैं। हौज रानी की कब्रों में काम करते किसी भी मजदूर की ई.एस.आई. नहीं है, पी.एफ. नहीं है।

"इन बेसमेन्ट फैक्ट्रियों को फैब्रिकेशन युनिट कहते हैं। इनके डायरेक्टर लोग गुड़गाँव और ओखला की कम्पनियों से काम लाते हैं। डायरेक्टर साहबों और कारीगरों के बीच पीस रेट पर विवाद होते ही रहते हैं। कल, 30 जून को ही एक फैक्ट्री में कारीगरों ने पीस रेट को कम पा कर काम बन्द कर दिया। फैक्ट्री में 3-4 घण्टे उत्पादन बन्द रहा। डायरेक्टर ने रेट 4½ की जगह 6½ रुपये प्रति पीस किया तब काम शुरू हुआ – कारीगरों की माँग 7 रुपये की थी।"

नूतन प्रिन्टर्स वरकर : "एफ-89/12 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में मुख्यतः केन्द्र सरकार का काम होता है – एन.सी.ई.आर.टी. और ओपन स्कूल की किताबें छपती हैं। एक रंग की छपाई करने वाली 4 एच एम टी मशीनें हैं। बेसमेन्ट में डाई कटिंग तथा पेपर कटिंग मशीनों के संग चार रंग में छपाई करने वाली एक प्लान्टा मशीन तथा एक याक्यामा मशीन हैं। नियम अनुसार एक शिफ्ट के लिये 40 मजदूर होने चाहियें परन्तु यहाँ तो 25 मजदूरों से जबरदस्ती ढाई शिफ्ट काम करवाया जा रहा है.....

"नूतन प्रिन्टर्स में सोमवार को सुबह 9½ शिफ्ट आरम्भ होती है और रात 9 बजे छुट्टी होती है। मंगलवार को सुबह 9½ काम शुरू करते हैं और .... और बुधवार को रात 9 बजे जा कर छुट्टी होती है। वीरवार को सुबह 9½ बजे शिफ्ट आरम्भ होती है और ... और शुक्रवार को रात 9 बजे छुट्टी। शनिवार सुबह 9½ काम शुरू करते हैं और.... और रविवार को रात 9 बजे जा कर छुट्टी होती है। बीमार होने पर भी जबरन 35½ घण्टे फैक्ट्री में रोकते हैं....

"नूतन प्रिन्टर्स में 35½ घण्टे ड्युटी के दौरान कम्पनी 35 रुपये भोजन के देती है। भोजन अवकाश दोपहर 1 बजे, फिर रात 9 से 10 और फिर रात को कोई ब्रेक नहीं होता, अगले दिन दोपहर 1 बजे भोजन अवकाश। कम्पनी 11½ घण्टे, 35½ घण्टे के दौरान एक कप चाय भी नहीं देती – मशीनें चलती रहती हैं और आपस में भाईचारे में हम बीच-बीच में चाय-नाश्ते के लिये जाते हैं......

"नूतन प्रिन्टर्स कम्पनी एच एम टी मशीनों पर 12 घण्टे में 30 हजार दाब के हिसाब से 35½ घण्टे में 90 हजार दाब माँगती है। प्लान्टा पर 50 हजार के हिसाब से डेढ लाख दाब और याक्यामा पर 12 घण्टे में 40 हजार के हिसाब से 35½ घण्टे में 1 लाख 20 हजार दाब कम्पनी माँगती है। इस प्रकार निर्धारित उत्पादन के पूरा नहीं होने की आड़ में कम्पनी 35½ घण्टे को 32 घण्टे करार देती है। मैनेजर फैक्ट्री के ऊपर रहता है, डरते हुये ही सही पर मजदूर रात को दो घण्टे सो ही लेते हैं।

"नूतन प्रिन्टर्स में यह सामान्य स्थिति है, साल के बारहों महीने ऐसा होता है। कभी एक मशीन पर काम नहीं होता तो दूसरी पर लगा देते हैं। कम्पनी 25 मजदूरों से 100 मजदूरों के लिये निर्धारित उत्पादन करवाती है। घण्टे काटने पर भी महीने में ओवर टाइम 200-250-270 घण्टे हो जाता है। ओवर टाइम का भुगतान डबल की बजाय सिंगल रेट से है पर फिर भी हर मजदूर की यह राशि तनखा के बराबर, तनखा से ज्यादा हो जाती है..... (बाकी पेज तीन पर)

"नूतन प्रिन्टर्स कम्पनी दस्तावेजों में ओवर टाइम को नहीं दिखाती। ऊपर से कम्पनी रजिस्टर में छुट्टियाँ भरती रहती है, अनुपस्थितियाँ दर्ज करती रहती है। महीने में तीसों दिन काम, एक महीने में ढाई महीने शिफ्ट काम और रजिस्टर में 15-20 दिन की ही हाजिरी। इस प्रकार महीने में 15-20 दिन उपस्थिति दर्शा कर उसी पर कम्पनी भविष्य निधि कार्यालय में पी.

ई.एस.आई. अस्पताल, ओखला से सटा कर सरकार गन्दगी की पहाड़ी बना रही है। पुराने और रोज ट्रकों से गिराये जाते नये कचरे की बदबूदार हवा को कूलर वार्डों के अन्दर खींच कर बीमारों को नई बीमारियाँ देते हैं। कर्मचारियों-अधिकारियों की बदतमीजी, वार्डों में- बाथरूमों में गन्दगी, सरकार निर्मित कचरे की पहाड़ी में अब बरसात की करामात .... यह सब है ओखला ई.एस.आई. अस्पताल में। मजदूरों के उपचार-स्थल में तन के साथ मन को बीमार करने का प्रबन्ध है।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद – 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

शिवालिक ओवरसीज मजदूर : "प्लॉट 31 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में एक शिफ्ट है और मई में पूरे महीने हमें सुबह 9 से रात 2 बजे तक ड्युटी करनी पड़ी। अब काम कम है इसलिये सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी है। रात 2 बजे तक रोकते हैं तब 17 रुपये भोजन के देते हैं पर तीन महीने बाद। महीने के तीसों दिन ड्युटी करनी पड़ती है। फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 1600 रुपये तथा ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और कारीगर पीस रेट पर। फैक्ट्री में कोई भी मजदूर स्थाई नहीं है – 500 कैजुअल वरकर हैं जिनमें हैल्परों की तनखा 2484 रुपये है। ई.एस.आई. तथा पी.एफ. कम्पनी की अंक विद्या अनुसार। कैजुअल वरकर का नम्बर हर महीने बदला जाता है और यह अंक 100 से कम हो जाता है तब कम्पनी ई.एस.आई. व पी.एफ. काटना शुरू करती है। छह महीने तक तनखा से यह पैसे काट कर कम्पनी फिर इन्हें काटना बन्द कर देती है – मजदूर लगातार फैक्ट्री में काम जारी रखता-रखती है। तीन-चार महीने बाद वरकर का अंक फिर 100 से कम हो जाता है तब फिर कम्पनी तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटना शुरू कर देती है।"

ए क्यू टैक्नो इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 209 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में काम करते 125 मजदूरों में से 25 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। अप्रैल माह की तनखा हमें आज 14 जून तक नहीं दी है पर मई का वेतन 11 जून को दे कर कम्पनी अप्रैल की तनखा किस्तों में देने की कह रही है। हैल्परों की तनखा 1800-2200 रुपये और ऑपरेटरों की 2400-2600 रुपये। फैक्ट्री में पीने के पानी की भारी समस्या है – कम्पनी तीन दिन में एक बार पानी मँगाती है। हमें फैक्ट्री के बाहर जा कर पानी ढूँढना पड़ता है। फैक्ट्री में भारी प्रदूषण है पर एग्जास्ट फैन एक भी नहीं लगाया है।"

कृष्णा इन्टरप्राइजेज-मैग्नेट इंजिनियरिंग मजदूर : " संजय मेमोरियल इन्डस्ट्रीयल इस्टेट में प्लॉट 25 तथा 8 स्थित फैक्ट्रियों में हैल्परों की तनखा 2000 रुपये तथा ऑपरेटरों की 2600-3000 रुपये। दोनों की मैनेजमेन्ट एक है और इन में काम करते 50 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। बरसों से काम कर रहे मजदूर मैग्नेट इंजिनियरिंग से नौकरी छोड़ते हैं तो उन्हें प्रति वर्ष 15 दिन का हिसाब भी नहीं देते और कहते हैं कि यह फैक्ट्री तो बन्द कर दी है जबकि आँखों के सामने वह चल रही है।"

श्याम टैक्स इन्टरनेशनल वरकर : "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी जिन्हें स्वयं रखती है उन्हें 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के तीन हजार रुपये देती है। महीने के तीसों दिन काम करना पड़ता है – 4 दिन को कम्पनी ओवर टाइम कहती है, भुगतान सिंगल रेट से। भोजन अवकाश में बाहर नहीं जाने देते और कैन्टीन में भीड़ बहुत होती है – खड़े हो कर भोजन करना पड़ता है। मई माह की तनखा हमें आज 15 जून तक नहीं दी है – 6 ठेकेदारों के जरिये रखे 700 वरकरों को तो वेतन और भी देरी से देते हैं।"

सेक्युरिटी गार्ड : " जवाहर कॉलोनी में कार्यालय वाली शिवम् सेक्युरिटी कम्पनी गार्डो को 12 घण्टे रोज और महीने के तीसों दिन ड्युटी के बदले में 2200-2400 रुपये देती है। हम गार्डो की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

नूकेम केमिकल वरकर : "54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में अप्रैल माह की तनखा हम मजदूरों को 7 जून को जा कर दी। मई का वेतन आज 13 जून तक नहीं दिया है। स्टाफ को तो कम्पनी ने अभी तक मार्च की तनखा भी नहीं दी है।"

गैलेक्सी इन्स्ट्रुमेन्ट्स मजदूर : " प्लॉट 2 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं है, बाहर जा कर पीना पड़ता है। साहब गाली देते हैं।"

जे बी एम इन्डस्ट्रीज वरकर : " प्लॉट 269 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 800 मजदूर काम करते हैं और 6 माह से तनखा देरी से दी जा रही है – 12 तारीख के बाद। अप्रैल माह में स्थाई मजदूरों के संग कैजुअल वरकरों को भी वार्षिक वेतन वृद्धि दी जाती थी। इस वर्ष स्थाई को तो यह दे दी पर कैजुअलों को नहीं। कम्पनी हैल्परों को 2000 रुपये तनखा देती थी – इस तथ्य के उजागर होने और फैलने पर दो माह से इसे बढा कर 2560 रुपये कर दिया है।"

प्रीमियर प्लास्टिक मजदूर : " प्लॉट 41 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में काम करते 100 से ज्यादा वरकरों में 8-10 ही स्थाई हैं। हैल्परों की तनखा 2000-2100 रुपये।"

युनीक इन्जेक्शन मोल्डिंग वरकर : " प्लॉट 17 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्पर की तनखा 2000-2200 रुपये। फैक्ट्री में काम करते 160 मजदूरों में 2-4 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।"

विक्टोरा टूल्स मजदूर : "प्लॉट 46 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये रखे हम 250 वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। हम में हैल्परों की तनखा 2100 रुपये और ऑपरेटरों की 2400-2600 रुपये।"

साधु फोरजिंग वरकर : " पलॉट 340 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हम 250 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। हम में हैल्पर को 12 घण्टे रोज पर महीने के 2700 रुपये और ऑपरेटर को 3000 रुपये देते हैं।"

ओमेगा ट्युब मजदूर : "प्लॉट 5 गली न. 1 कृष्णा कॉलोनी सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2000 रुपये। मई की तनखा आज 14 जून तक नहीं दी है।"

कोहिनूर रबड़ वरकर : "26 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में तनखा 1800-2200 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

नेशनल इन्डस्ट्रीज मजदूर : "सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8 बजे तक की एक शिफ्ट है। महीने के तीसों दिन काम और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। नौकरी छोड़ने पर 10-15 दिन किये काम के पैसे नहीं देते।"

सुपर इन्डस्ट्रीज वरकर : "30/3 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1700 रुपये और ऑपरेटर की 2000-2200 रुपये। शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 20 पावर प्रेस हैं और 40 मजदूरों में 10 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ.। एक्सीडेन्ट होने पर प्रायवेट में इलाज करवा कर निकाल देते हैं।"

हरियाणा ग्लोबल मजदूर : "20/3 मथुरा रोड़ पर नोर्दन कम्पलैक्स में कम्पनी के दो प्लान्टों में 450-500 मजदूर काम करते हैं। भर्ती कम्पनी करती है, तनखा कम्पनी देती है, उत्पादन तय कर रखा है, काम 4 फोरमैन करवाते हैं और इन फोरमैनों को ही ठेकेदार कह कर कम्पनी 20-30 को छोड़ कर बाकी सब को ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर कहती है। फोरमैन उर्फ ठेकेदार उत्पादन के लिये हर समय हम मजदूरों के सीने पर सवार रहते हैं। फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं, पावर प्रेसों पर हाथ कटते हैं। घायल मजदूरों द्वारा जगह-जगह शिकायतों से दिक्कतें बढने पर कम्पनी ने जनवरी से सब मजदूरों पर ई.एस.आई. व पी.एफ. के प्रावधान लागू किये हैं। सुबह 8½ से रात 8 तथा रात 8½ से अगले रोज सुबह 8 बजे तक जबरन रोकते थे और सुबह वालों को रात 11½ तक रोकने पर 15 रुपये रोटी के देते थे। फरवरी में सुबह 7 से साँय 3½ तथा साँय 3 से रात 11 तक की शिफ्टें की लेकिन मार्च में सुबह 7 वालों को रात 11 बजे तक रोकने लगे हैं। कम्पनी 15 घण्टे रोकती थी तब रोटी के लिये 15 रुपये देती थी परन्तु अब 16 घण्टे रोकती है तब हमारी रोटी के पैसे खा गई है। रविवार को सुबह 7 से साँय 5 बजे तक काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 1800 से बढा कर 2100-2200 रुपये कर दी है पर हर महीने कुछ मजदूरों के पैसों में 100-200 रुपये की गड़बड़ी की जाती है। पूरे उत्पादन का निर्यात होता है।"

एवन पाइप वरकर : "प्लॉट 42 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 16 स्थाई मजदूर, 30 कैजुअल वरकर और एक ठेकेदार के जरिये रखे 100 वरकर काम करते हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे सब मजदूरों की तनखा से काटते हैं लेकिन 5-6 महीने वालों के पैसे ठेकेदार जमा ही नहीं करता – निकालने अथवा छोड़ने पर पी.एफ. राशि निकालने का फार्म ठेकेदार भर कर ही नहीं देता।"

प्रतिदिन 8 घण्टे काम और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी पर 01.04.2007 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3510 रुपये; अर्धकुशल अ 3640 रुपये; अर्धकुशल ब 3770 रुपये; कुशल श्रमिक अ 3900 रुपये; कुशल श्रमिक ब 4030 रुपये; उच्च कुशल मजदूर 4160 रुपये। सामान्य स्टाफ में दसवीं से कम 3640 रुपये; 14वीं से कम 3900 रुपये; स्नातक 4160 रुपये; हलका वाहन चालक 3900 रुपये; भारी वाहन चालक 4160 रुपये; सुरक्षा गार्ड बिना हथियार 3640 रुपये। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है। वैसे इन तनखाओं में मजदूर अपने बच्चों को ढँग का पाव-पाव दूध और माता-पिता को ढँग की दाल नहीं खिला सकते।

ग्लोब कैपेसिटर मजदूर : "22 बी तथा 30/8 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में हमारी मई माह की तनखा में 600 रुपये बढा कर हम से 3510 रुपये न्यूनतम वेतन पर हस्ताक्षर करवाये। लेकिन ग्लोब कैपेसिटर में 10 घण्टे बराबर 8 घण्टे वाली धोखाधड़ी जारी है।"

नगर निगम वरकर : "मस्टर रोल वाले मजदूरों को मई की तनखा 3510 रुपये न्यूनतम वेतन के अनुसार दी है। नये वेतनमान पहली अप्रैल से लागू हैं इसलिये एक महीने का एरियर भी दे दिया गया है।"

एक छोटा-सा कदम : अगर आपको ऊपर दर्शाये न्यूनतम वेतन नहीं दिये जा रहे तो कम्पनी-फैक्ट्री-कार्यस्थल का पता देते हुये इन साहबों को पत्र भेजें:

1. श्रीमान उप श्रम आयुक्त
   श्रम विभाग कार्यालय
   पुराना ए डी सी दफ्तर, सैक्टर-15ए
   फरीदाबाद – 121007
2. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार
   30 वेज बिल्डिंग
   सैक्टर-17
   चण्डीगढ
3. श्रीमान श्रम मन्त्री,
   हरियाणा सरकार
   हरियाणा सचिवालय
   चण्डीगढ
4. श्रीमान मुख्य मन्त्री,
   हरियाणा सरकार
   हरियाणा सचिवालय
   चण्डीगढ

गुड़गाँव से ...... (पेज चार का शेष)

ड्राइवर तथा कारें, मजदूरों को लाने-ले जाने के लिये 150 ड्राइवर व बसें आदि-आदि। होण्डा कम्पनी अब ट्रेनी रखती ही नहीं और स्थाई मजदूर मुख्य-मुख्य कार्य करते हैं। फैक्ट्री में उत्पादन का ज्यादातर काम ठेकेदारों के जरिये रखे हम वरकर करते हैं। हम आई टी आई किये होते हैं पर हमारी ट्रेड का काम फैक्ट्री में हमें नहीं देते। छह महीने बाद 8 महीने का ब्रेक तो करते ही हैं। ऐसे में यहाँ नौकरी करना हमें कहीं का नहीं छोड़ता पर मजबूरी में फिर भी करते हैं। इधर पिछले महीने से ठेकेदार ने हम पर निगाह रखने के लिये लोग छोड़ रखे हैं, स्कूटर प्लान्ट में ही दस हैं। बैठा दिखते ही पहचान-पत्र खोस लेते हैं, बाहर कर दिया जाता है। इससे हर समय दहशत रहती है।

"***होण्डा फैक्ट्री*** में हमारी तनखा 3249 रुपये है, इसमें 1000 रुपये किसी खाते से तथा 775 रुपये पूर्ण उपस्थिति भत्ता के तौर पर जोड़ते हैं। फैक्ट्री में काम का बहुत ज्यादा दबाव रहता है पर इस 775 रुपये के लालच में हम बहुत कुछ छोड़ कर भी ड्युटी करते हैं। एम एस विभाग में पूरे दिन धूप में काम करना पड़ता है। और फिर पेन्ट शॉप, मशीन शॉप, वैल्ड शॉप में महीने में 70-100 घण्टे ओवर टाइम – भुगतान दुगुनी दर से है इसलिये भारी परेशानी के संग 'चाहत' भी रहती है।

"होण्डा फैक्ट्री में हमारी तनखा से 390-400 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के काटते हैं। हम में से किसी की पे-स्लिप पर पी.एफ. नम्बर होता है तो किसी की पर नहीं होता। पी.एफ. में भारी गैड़बड़ है – बड़े ठेकेदार ने तो दिल्ली में एक स्कूल को प्रमुखता दे कर ऐसा जाल रचा है कि होण्डा में काम कर चुके 95 प्रतिशत मजदूरों को ब्रेक पर उनका पी.एफ. का पैसा नहीं मिला।"

कुमार प्रिन्टर्स वरकर : "प्लॉट 24 सैक्टर-5 आई एम टी मानेसर, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 175 स्थाई तथा ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूर रोज 12-16 घण्टे ड्युटी करते हैं। फैक्ट्री 24 घण्टे चलती है, रविवार सुबह 8 से साँय 4.40 तक ही। स्थाई को ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से और ठेकेदारों के जरिये रखों को सिंगल रेट से। महीने में ओवर टाइम के 135-225 घण्टे हो जाते हैं। फैक्ट्री में कम्प्युट्रीकृत मशीनों से कॉलगेट, ओडोमास, मोबाइल फोन आदि-आदि की पैकिंग वाले गत्ते-कागज की छपाई होती है। छपाई की कई मशीनों पर कई काम के संग कटिंग, डाई नोचिंग, वार्निश, पैकिंग, सफाई के काम होते हैं। एक्सीडेन्ट होने पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते – एक मजदूर का अँगूठा कटा तो ई.एस.आई. ले जाने की बजाय प्रायवेट में इलाज करवा कर उसे निकाल दिया। इलाके में लूटपाट को देखते हुये रात 12-2 बजे फैक्ट्री से छूटते मजदूर 4 से कम होते हैं तो कम्पनी उन्हें गाड़ी में भेजती है। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की तनखा में से पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर दो साल बाद छोड़ते हैं तब भी फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरते। आई एम टी मानेसर स्थित नब्बे प्रतिशत फैक्ट्रियों में मजदूरों की पी.एफ. राशि बड़े पैमाने पर हड़पी जा रही है।"

कुछ बातें दिल्ली से ... (पेज एक का शेष)

एफ. राशि जमा करती है। जबकि पी.एफ. के पैसे हम मजदूरों की पूरे महीने की तनखा पर काटे जाते हैं.....

"***नूतन प्रिन्टर्स*** में कानूनी तौर पर मजदूर को ग्रेच्युटी राशि से वंचित करने के लिये 5 वर्ष पूरे होने से 3-4 महीने पहले हिसाब कर देते हैं। यानी, मजदूर फैक्ट्री में काम करता रहता है पर रजिस्टर में नाम काट देते हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. बन्द कर देते हैं। चार-छह महीने बाद फिर रजिस्टर में नाम दर्ज कर ई.एस. आई. व पी.एफ. काटने लगते हैं। इस प्रकार तीन-तीन बार नाम कटे और फिर जुड़े वाले लोग भी फैक्ट्री में हैं।

"नूतन प्रिन्टर्स में हैल्पर की तनखा 2000 रुपये – जिन हैल्परों से मशीनें चलवाते हैं उनकी 2500 रुपये। प्लान्टा ऑपरेटर की तनखा 10,000 और एच एम टी ऑपरेटर की 4500 रुपये। असिस्टेन्ट ऑपरेटरों की तनखा 3500-4500 रुपये। वर्ष में 22 सवेतन छुट्टियों की जगह कम्पनी 15 ही देती है और कैजुअल छुट्टियाँ देती ही नहीं। चौकीदार-चपरासी-चाय बनाने वाले एक मजदूर को रोज 24 घण्टे की ड्युटी के बदले महीने में 4000 रुपये। फैक्ट्री में बिजली कर्मी नहीं है, पेपर कटिंग वाले से जबरन यह काम भी...."

एम.डी. ओवरसीज मजदूर : "एफ-45 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़ों पर कम्प्युट्रीकृत मशीनों से कढाई का काम होता है। फ्रेमर की तनखा 3000, ऑपरेटर की 2800 और हैल्पर की 1800 रुपये है। ओखला में कम्प्युटर इम्ब्राइडरी का काम 40 फैक्ट्रियों में होता है और इन में से 30 में ऑपरेटरों की तनखा 2800 रुपये ही है – ओरियन्ट फैशन, ओरियन्ट क्राफ्ट में तनखा 3200, 3300 रुपये पर कई शर्तें हैं। कढाई के लिये माल फरीदाबाद से आता है। फैक्ट्री में काम करते हम 20 मजदूरों में से किसी की भी ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी 12 घण्टे में एक कप चाय भी नहीं देती। भोजन अवकाश का आधा घण्टा काट कर 3½ घण्टे का ओवर टाइम देते हैं – पैसे डबल की बजाय सिंगल रेट से।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत है।

*महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री **बाँटते हैं।** मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

गुड़गाँव से -

ब्रेक्स इण्डिया मजदूर : "प्लॉट 873-874 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 30 स्थाई और एरिस कोरपोरेट ठेकेदार के जरिये रखे 175 वरकर मारुति कारों के डिस्क ब्रेक, ड्रम ब्रेक, बूस्टर बनाते हैं। स्थाई मजदूर की तनखा 8-9 हजार रुपये, 1998 के बाद किसी को स्थाई नहीं किया है। ठेकेदार के जरिये रखे हम मजदूरों की तनखा 2648 रुपये है — पुराने 25 की 3248 रुपये। सामान कम्पनी की तमिल नाडु में मुख्य फैक्ट्री से आता है और यहाँ 4 लाइनों पर असेम्बली होती है। खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। कमर में-पैर में दर्द होता है। ज्यादातर लोग 2-4-6 महीने में नौकरी छोड़ जाते हैं।

"ब्रेक्स फैक्ट्री में तनखा से पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर 2-4-6 महीनों में नौकरी छोड़ने वालों के फण्ड निकालने के फार्म भरते ही नहीं। महीने में हम 50-80 घण्टे ओवर टाइम करते हैं जिसके पैसे सिंगल रेट से देते हैं।

"शिफ्टें आरम्भ होने से दस मिनट पहले ब्रेक्स फैक्ट्री में बेसमेन्ट में सब का 5 मिनट व्यायाम होता है। फिर रोज किसी मजदूर को वहाँ टाँग रखी गुणवत्ता नीति पढने को बुलाते हैं — बाकी उसके पीछे दोहराते हैं। क्वालिटी के बारे में सुपरवाइजर-मैनेजर समझाते हैं। मजदूरों को काम पर भेज कर साहबों की फिर अलग सभा होती है।

"ब्रेक्स फैक्ट्री में चाय कम्पनी देती है, गर्मियों में 2½ बजे लस्सी भी। भोजन अच्छा रहता है — 4 रुपये मजदूर के तथा 38 रुपये कम्पनी के मिला कर बाहर से मँगाया जाता है। इधर कम्पनी ने अपनी मर्जी का नियम बना कर हमें बोनस देना बन्द कर दिया है।"

डेल्फी वरकर : " 42 मील पत्थर दिल्ली-जयपुर मार्ग, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों के सम्मुख समस्या ही समस्या हैं। हमें सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते — तनखा ही 2428 रुपये बताते हैं और एक दिन की छुट्टी करने पर इन में से 300 रुपये उपस्थिति भत्ते के हैं कह कर काट लेते हैं। हमारे ओवर टाइम के घण्टों में से 30-40 घण्टे हर महीने गायब कर देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान भी सिंगल रेट से, 12½/13½ रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से। उत्पादन कार्य में मजदूर 4 ठेकेदारों के जरिये रखे हैं, सेक्युरिटी गार्ड भी ठेकेदार के जरिये रखे हैं। ह्युमन रिसोर्स एजेन्सी के जरिये रखे 700 मजदूरों के पी.एफ. के पैसे भी खा जाते हैं — छोड़ने/निकालने पर फार्म नहीं भरते, गाजियाबाद का ऊपर से झमेला।

"डेल्फी में सुबह 8 वाली शिफ्ट के लिये हमें 6½ चलना पड़ता है — कैन्टीन में हमारे लिये चाय 7¼ तक, उसके बाद स्थाई मजदूरों को ही। और फिर, आठ बजे की शिफ्ट में हमें पौने आठ काम शुरू करना पड़ता है। कम्पनी बसें सिर्फ स्थाई के लिये हैं।

"डेल्फी फैक्ट्री में काम का भारी बोझ है और खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। लाइन बन्द होने पर ही हट सकते हैं। लाइन बहुत तेज चलाते हैं। पानी-पेशाब के लिये अनुमति-पत्र की आवश्यकता दो महीने से खत्म है पर फिर भी पानी-पेशाब की दिक्कत बनी हुई है। बीमार होने पर बदले में बन्दा माँगते हैं, बाहर नहीं जाने देते, आधे दिन की छुट्टी नहीं देते। फैक्ट्री के अन्दर दवाई के लिये भी पहले सुपरवाइजर-टीम लीडर से पर्ची लाने को कहते हैं। सुपरवाइजर गाली देते हैं।

"डेल्फी फैक्ट्री में शिफ्ट महीने में बदलती है। रात में लगातार काम करने से हम बीमार पड़ जाते हैं। तनखा में से ई.एस.आई. के पैसे काटते हैं पर .... टरमिनेशन मशीनों पर अँगूठा-उँगली कट जाते हैं — ई.एस.आई. नहीं ले जाते, एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते, मजदूर को कोई क्षतिपूर्ति नहीं। शिकायत पर कम्पनी कहती है कि ठेकेदार से बात करो। धमकी मिलती हैं। पिछले वर्ष के आरम्भ तथा अन्त में फैक्ट्री से छूट कर कमरे लौटते दो मजदूर सड़क पर घायल हुये। उन्हें ई.एस.आई. नहीं ले गये, ठेकेदार प्रायवेट अस्पताल ले गये। रक्त हम मजदूरों ने दिया पर वे नहीं बचे। ई.एस.आई. से उनके परिवार की पेन्शन नहीं हुई और डेल्फी कम्पनी ने मृत मजदूरों के परिजनों को कुछ नहीं दिया।"

☞ *(बाकी पेज तीन पर)*

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर मजदूर : "प्लॉट 1 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों और ठेकेदारों के जरिये रखे हम वरकरों की भरमार है — उत्पादन कार्य में दो ठेकेदारों के जरिये तीन हजार मजदूर, सफाई कार्य के लिये 200 वरकर, दो कैन्टीनों में 100 लोग, 50 से ज्यादा सेक्युरिटी गार्ड (ग्रुप फोर), साहबों के लिये ठेकेदार के जरिये 40 से ज्यादा

घायल होने पर

जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज में घायल हुये मजदूर की माँ : "पति की 13-14 साल पहले हुई मृत्यु के बाद मैं बच्चों को पालने रिश्तेदारों के पास फरीदाबाद आई। मेरी मदद के लिये बड़े बेटे राहुल ने चावला कॉलोनी में कपड़े की दुकान पर काम किया, छोटा बेटा मोनू जूते की दुकान पर काम कर रहा है। इस साल पहली जनवरी से राहुल प्लॉट 116-117 सैक्टर-25 स्थित जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज में लगा। बड़ी फैक्ट्री है, 500 से ज्यादा मजदूर हैं, डाई कास्टिंग का काम होता है। कभी दिन में तो कभी रात को पर रोज 12 घण्टे काम और कभी-कभी तो बेटे को फैक्ट्री में 36 घण्टे भी काम करना पड़ता था। राहुल 17 फरवरी को सुबह ड्युटी पर गया था और रात को नहीं लौटा तो मैंने सोच कि कम्पनी ने रोक लिया होगा। राहुल 18 की रात भी नहीं आया.. सैक्टर-25 में ही एक अन्य फैक्ट्री में काम कर रहे मेरे जेठ के बेटे ने 19 फरवरी को आ कर बताया कि राहुल अस्पताल में भर्ती है, जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज में काम कर चुके एक मजदूर ने यह बताया था.....

"17 फरवरी को फैक्ट्री में काम करते समय 20 वर्षीय राहुल लिफ्ट की चपेट में आ गया था — पेट कट गया, आँतें कटी, कमर का माँस निकला। मृत्यु के कगार पर राहुल फैक्ट्री में बेहोश पड़ा था और कम्पनी 'लाश' को ठिकाने लगाने की फिराक में थी। जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज के मजदूरों ने मशीनें बन्द कर दी तब कम्पनी राहुल को अस्पताल ले गई...

"ई.एस.आई. अस्पताल ले जाने की बजाय कम्पनी राहुल को फैक्ट्री से काफी दूर पुरानी डबुआ सब्जी मण्डी के निकट तान्या नर्सिंग होम ले गई। दोहरा ऑपरेशन हुआ — आँतों की सिलाई की गई और फिर पेट में 17 टाँके लगे। कमर की ओर भी गम्भीर चोट को अनदेखा किया गया। जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज के मजदूरों ने राहुल के लिये रक्त दिया.....

"19 फरवरी को हम परिवार के लोग तान्या नर्सिंग होम पहुँचे तो वहाँ कम्पनी की तरफ से रखे लोग चलते बने — मृत्यु पर लाश गायब कर देते। डॉक्टर कम्पनी का आदमी लगता है — हमें कोई कागजात नहीं दिये। राहुल की स्थिति में सुधार हुआ। डॉक्टर उसे घर ले जाने की कहने लगा तो हम ने टाँके तो कटने देने की बात कही। कम्पनी ने तान्या नर्सिंग होम में बिस्तर पर लेटे राहुल की फोटो ली। टाँके 25 फरवरी को कटे और उसी दिन घर भेज दिया। कन्हैया ठेकेदार 26 फरवरी को चावला कॉलोनी, बल्लभगढ में हमारे किराये के कमरे पर आया और ई.एस.आई. का कच्चा कार्ड दे कर सैक्टर-7 ई.एस. आई. डिस्पेन्सरी से इलाज करवाने की कह गया.....

"तान्या नर्सिंग होम में खींची राहुल की फोटो से राहुल का मुँह ले कर उसे ई.एस.आई. कच्चा कार्ड वाली फोटो में कोट-टाई लगाई गई थी। राहुल पहली जनवरी को फैक्ट्री में लगा था पर उसकी भर्ती 12 फरवरी की दिखाई गई — घायल होने से 5 दिन पहले की। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट में जगह तो जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज ही दर्शाई पर राहुल को कुशवाह एण्ड कम्पनी का वरकर दिखाया। कुशवाह एण्ड कम्पनी ठेकेदार का पता जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज वाला ही....

"दिखने में बड़े घाव पेट के थे पर उन से भी गम्भीर चोट कमर की, रीढ की हड्डी की थी। राहुल खड़े होने की स्थिति में नहीं था। कमर में हम उसे हाथों में उठा कर नित्यकर्म करवाते और ई.एस.आई. भी ले जाते। थोड़ा ठीक होने पर ई.एस.आई. डॉक्टर ने 8 मई को राहुल को फिटनेस सर्टिफिकेट दे दिया..... मैं राहुल को ले कर फैक्ट्री गई तो जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज और कुशवाह एण्ड कम्पनी, दोनों ने राहुल को ड्युटी पर लेने से साफ मना कर दिया....

"बेटे को खड़ा होने और खड़ा रहने में दिक्कतों को देख मैंने ई.एस.आई. डॉक्टरों-अधिकारियों के पास भागदौड़ की। मुझे पता चला कि राहुल की रीढ की चोट गम्भीर है..... राहुल को अधिक इलाज और आराम की आवश्यकता है। ई.एस.आई. अधिकारियों को इस बारे में आवेदन दिये हैं..... बेटे को ले कर इधर-उधर जाती हूँ, लोग सहायता भी कर रहे हैं पर भागदौड़ तो मुझे ही करनी है।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एव सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73